Course : B.A (Education Hons.), Part-I

Paper : II (भारत में शिक्षा का विकास)
(Development of Education in India)

Prepared by : Dr. Meena Kumari

Topic : वैदिक युग में शिक्षा
(Education During Vedic Period)

---

1. प्रस्तावना : प्राचीन भारत अपने विशेष शिक्षा पद्धति के लिए विश्व में जाना जाता है । भारतीय शिक्षा की पृष्ठभूमि विश्व में सर्वाधिक पुरानी है । किसी भी राष्ट्र की पहचान वहाँ की संस्कृति से है और सांस्कृतिक मूल्यों की नींव तथा संरक्षण शिक्षा के द्वारा ही संभव है । अतः शिक्षा का महत्व हर युग में रहा है ।

वैदिक शिक्षा का प्रारंभ वेदों से मानी जाती है । वैदिक शिक्षा उच्च कोटि की थी । जिसका उद्देश्य व्यक्ति तथा समाज का विकास करना था ।

2. शिक्षा का अर्थ : वैदिक शिक्षा का अर्थ बहुत ही व्यापक था । वेद के अनुसार, शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है । शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को उस समय **विप्र** कहा जाता था । वैदिक काल में शिक्षा को प्रकाश का स्रोत माना गया जो व्यक्ति को सच्चा मार्ग दिखाता है । वैदिक शिक्षा के विभिन्न अर्थ :

1. शिक्षा प्रकाश है जो मनुष्य के तीसरे नेत्र की तरह कार्य करता है तथा उसे सच्चे मार्गों की ओर प्रशस्त करती है ।

2. शिक्षा मूल्यों के विकास के प्राप्ति का एक साधन है । वैदिक युग में जन्म के आधार पर विभाजन नहीं था अतः समाज में मूल्यों की विकास तथा ज्ञान के आधार पर ही स्तर बाँटा गया था ।

3. आचार्य शिक्षा तथा चरित्र निर्माण का साधन था । शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में सत्य, निष्ठा तथा उच्च आचरण का विकास करना था । यर्जुवेद में कहा गया है कि मैं असत्य को छोड़कर सत्य को अपनाता हूँ ।

4. शिक्षा विद्या तथा बुद्धि का समन्व्य है । विद्या के साथ–साथ व्यवहारिक बुद्धि का होना आवश्यक है । अतः वेद का कथन है कि सरस्वती (विद्या) के साथ धी (व्यवहारिक बुद्धि) आवश्यक है ।

5. शिक्षा, ज्ञान और कर्म का समन्व्य है । अथर्ववेद में कहा गया है कि मेरी बुद्धि सदा कर्मठ रहे । अतः ज्ञान के साथ–साथ कर्म पर भी ज़ोर दिया गया था ।

6. शिक्षा, में तप और दीक्षा का समन्व्य । अर्थववेद में मूल्यों का विकास के साथ–साथ तप (चिंतन तथा अनुशासन) और दीक्षा (समर्पण) को राष्ट्र के विकास का आधार बताया गया है ।

7. शिक्षा, बुद्धि के परिष्कार तथा बौद्धिक विकास में सहायक ।

8. शिक्षा, संस्कृति के सरंक्षण तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के निर्वहन का एक शक्तिशाली तथा प्रभावी माध्यम ।

9. तीन ऋणों का सिद्धांत । वैदिक युग में प्रत्येक व्यक्तियों को तीन ऋणों के साथ जन ग्रहण माना जाता था । सर्वप्रथम देवताओं का ऋण, दूसरा ऋषियों का ऋण तथा तीसरा पितरों का ऋण । माता–पिताओं की आज्ञाओं का पालन, गुरूजनों का आदर तथा परंपराओं का संरक्षण भी शिक्षा का भाग था ।

3. वेदों में निहित ज्ञान : वेद का अर्थ होता है जानना । वेदों में सभी प्रकार का ज्ञान समन्वित है । वेद में समस्त कला तथा विज्ञान की मूलभूत तथ्यों की जानकारी प्रदान की गई है । वेद को ज्ञान का प्रथम स्रोत माना जाता है । मानव जीवन की सभी पहलूओं से सम्बन्धित ज्ञानों को इसमें बताया गया है । वेदों में अत्यंत उच्च कोटी के आदर्शों तथा मूल्यों का समावेश था । वेद में सिर्फ विषय वस्तुओं को ही नहीं बताया गया है बल्कि प्रयोगों को भी व्यापक तरीके से समझाया गया है । **एस०सी० विलियम जोंस** के शब्दों में ''वेदों से हमें शल्य–क्रिया, औषधि, संगीत, धनुर्विद्या तथा भवन निर्माण का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त होता है । वे जीवन के प्रत्येक पहलू जैसे कि संस्कृति, धर्म, विज्ञान, रहस्यवाद, नीतिशास्त्र, विधि, ब्रह्मांड, विज्ञान और मौसन विज्ञान आदि के विश्वकोष हैं ।''

वेदों को ईश्वर की वाणी समझा जाता है । ऋषियों और मुनियों ने वेदों में निहित ज्ञान को तप तथा साधना के द्वारा प्राप्त करते थे । **ऋग्वेद**, विश्व के पवित्र धर्मग्रंथों में सबसे प्राचीन है । यह सभी ज्ञानों का मूल स्रोत है । ऋग्वेद कालीन लोग स्वंय को **आर्य** कहते थे । **यजुर्वेद** में धार्मिक अनुष्ठानों का विवरण मिलता है । **अर्थववेद**, चिकित्सा विज्ञान से सम्बन्धित है । **सामवेद**, गीतों का संग्रह है । चारों वेद, वैदिक साहित्य के मूल और प्रमुख स्रोत हैं । वेदों को श्रुति भी कहते हैं क्योंकि इसमें निहित ज्ञानों का आदान–प्रदान सुनकर तथा बोलकर किया जाता था ।

4. वैदिक कालीन शिक्षा की विशेषताएँ : इस काल की गणना में बहुत ही विवाद है । कुछ लोग इसे 4000 ई०पू० से मानते हैं । जबकि **सर्वपल्ली राधाकृष्णन** के अनुसार, वैदिक काल अस्पष्ट है । यह 2500–6000 ई०पू० के बीच हो सकता है । **स्वामी दियानंद** के अनुसार, वेदों का अस्तित्व अनंत काल से है । प्राचीन वैदिक शिक्षा उच्च कोटी की तथा

समृद्ध थी । इसका उद्देश्य बहुत ही व्यापक था । व्यक्तियों का पूर्ण विकास से लेकर मानव को श्रेष्ठ बनाना के साथ–साथ समाज, देश तथा विश्व का कल्याण था ।

शिक्षा का उद्देश्य :

शिक्षा का मूल उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति थी । भौतिक शिक्षा के साथ–साथ आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल दिया गया था ।

वैदिक शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास में ईश्वर की भक्ति, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नति कर उसे एक उपयोग सदस्य बनाना था जो देश की उन्नति तथा राष्ट्रीय संस्कृति के संरक्षण तथा प्राचीन भारतीय शिक्षा के प्रसार में अपना योगदान कर सके ।

शिक्षा का संगठन :

वैदिक काल में बालक की शिक्षा गुरूकुल में होती थी । उनका जीवन–यापन भिक्षाटन के द्वारा होता था । शिष्यों को स्वीकार करना गुरू की इच्छा पर निर्भर था । बालक को शिष्य रूप में स्वीकार करने के बाद उसे कई नियमों तथा संस्कारों से गुजरना पड़ता था ।

उपनयन संस्कार – बालक के शिक्षा को आरंभ करने के लिए किया जाता था । उपनयन के पश्चात् बालक को द्विज कहा जाता था ।

वेदारंभ संस्कार – इससे वेद अध्ययन का आरंभ होता था।

3. समावर्त्तन संस्कार – यह गुरूकुल में शिक्षा की समाप्ति पर होता था इसे दीक्षान्त संस्कार भी कहते हैं ।

गुरूकुल में प्रवेश के बाद गुरू अपने छात्रों के शारीरिक, नैतिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक विकास पर ध्यान रखता था । गुरू अपने शिष्यों को अपने बच्चों की तरह रखते थे । गुरू का कार्य केवल पढ़ाना नहीं था बल्कि चरित्र निर्माण तथा मूल्यों का निर्माण करवाना भी उनका दायित्व था ।

छात्र ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके नियमित दिनचर्या व्यतीत करते थे । गुरूकुल सामान्यतः वन या प्राकृतिक वातावरण में होता था ।

पाठ्यक्रम :

वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम बहुत ही व्यापक था । पाठ्यक्रम में चारो वेदों के साथ–साथ इतिहास, पुराण, व्याकरण, अर्थशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, भूगर्भ विद्य, तर्कशास्त्र, आचार्यशास्त्र, भौतिकी, ब्रह्मविद्या, प्राणिशास्त्र, सैन्य विज्ञान, शिल्प विज्ञान, संगीत शास्त्र एवं आयुर्वेद इत्यादि का अध्ययन कराया जाता था ।

शिक्षण पद्धति : इस काल की अध्यापन विधि मौखिक थी । शिक्षण पद्धति में तीन क्रियाओं का समावेश होता था :

श्रवण – इसका अर्थ होता है सुनना । श्रवण से स्मृति, एकाग्रता, उच्चारण, कुशलता, समझ आदि गुणों का विकास होता था ।

मनन – वेद मेंत्रों के रहस्य तथा गूढ़ अर्थों का चिन्तन करना था जिससे तर्कशक्ति, न्याय, निर्णय शक्ति, विशलेषणा तथा संश्लेषण आदि गुणों का विकास होता था ।

निदिध्यासन – इसमें वेद रहस्य की आत्मानुभूति किया जाता था । जिससे आत्म परिचय, आत्मानुशासन, आत्म नियंत्रण तथा मानसिक गुणों का विकास होता था ।

गुरू–शिष्य संबंध : इनका संबंध पिता तथा पुत्र जैसा था ।

शिक्षण प्रणाली : संपूर्ण शिक्षा प्रणाली व्यक्तिगत थी । गुरू अपने प्रत्येक शिष्य को पहचानते थो और उससे वार्तालाप करते थे ।

स्त्री शिक्षा : वैदिक काल में स्त्री शिक्षा का प्रमाण मिलता है । वेदों में 29 स्त्रियों के नाम मिलते हैं जिन्होंने वेद मंत्र लिखे थे ।

परीक्षा प्रणाली : इसमें व्यक्तिगत योग्यता पर ध्यान दिया जाता था । शास्त्रार्थ के द्वारा उच्च कोटी की उपाधि प्रदान की जाती थी । जैसे – स्नातक ।

अनुशासन : आत्मानुशासन को उत्तम अनुशासन माना जाता था । इन्द्रिय निग्रह पर बल दिया जाता था ।

निःशूल्क शिक्षा : शिष्यों को किसी भी प्रकार का शूल्क दान नहीं करना पड़ता था ।

बाह्य नियंत्रण से मुक्ति : वैदिक शिक्षा पर राज्य तथा सरकार का नियंत्रण नहीं था । राजा का कर्त्तव्य था कि वह इस बात को देखे कि विद्वान पंडित बिना किसी विघ्न के गुरूकुल मं अध्ययन कर रहे हैं ।

जनसाधरण की शिक्षा : सभी बच्चों के लिए शिक्षा उपलब्ध थी । जनसाधारण अध्यापकों तथा छात्रों में बहुत ही अधिक समन्व्य था ।

शिक्षा में दण्ड : गुरू अपने शिष्यों को शारीरिक दण्ड भी देते थे । कभी–कभी दण्ड बहुत कठोर होता था ।

गुरूदक्षिणा : शिक्षा समाप्त होने तथा समावर्तन के उपरान्त शिष्य का कर्त्तव्य था कि वह गुरू को दक्षिणा द्वारा प्रसन्न करें ।

उपर्युक्त संर्दभों को देखने से पता चलता है कि वैदिक शिक्षा बहुत ही समृद्ध थी । शिक्षा की प्रकृति आध्यात्मिक होते हुए भी भौतिक समृद्वि की भी बात करती है । वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, संस्कार निर्माण, मूल्य निर्माण, सत्य

की खोज, सामाजिक कुशलता तथा विश्व कल्याण के उद्देश्यों की प्राप्ति में पूर्णतः सफल रहा है । अतः उस समय की शिक्षा व्यवस्था की विशेषताओं को वर्तमान शिक्षा पद्धति में शामिल कर इसे समृद्ध बनाया जा सकता है । वर्त्तमान काल में वैदिक शिक्षा पूर्ण रूप से प्रासंगिक है ।